संतुलित वृद्धि एवं असंतुलित वृद्धि

Balanced vs Unbalanced Growth

संतुलित वृद्धि — संतुलित वृद्धि में विभिन्न उपभोक्ता-वस्तु उद्योगों के बीच और उपभोक्ता-वस्तु तथा पूँजी-वस्तु के बीच संतुलन होता है। इसका अभिप्राय यह है कि उद्योग तथा कृषि में और घरेलू तथा निर्यात क्षेत्र में संतुलन रहे। संक्षेप में कह सकते हैं कि संतुलित वृद्धि यह बताता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों का एक साथ सामंजस्यपूर्ण विकास होना चाहिए ताकि सब क्षेत्र साथ-साथ बढ़ें।

असंतुलित वृद्धि — असंतुलित वृद्धि में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में एक-साथ निवेश न करके केवल कुछेक क्षेत्रों में ही सर्वप्रथम निवेश किया जाता है। किसी भी अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के पास साधन और पूँजी इतने नहीं होते कि समस्त क्षेत्रों में निवेश एक साथ किया जा सके। इस कारण ऐसे देशों में कुछ चुने हुए प्रमुख क्षेत्रों या उद्योगों में निवेश करके उनमें विकास की गति तीव्र की जाती है और उनसे उत्पन्न होने वाली मितव्ययिताओं में वृद्धि होने से अन्य क्षेत्रों का भी विकास होता है।

~~संतुलित विकास वृद्धि~~ ~~असंतुलित वृद्धि~~

* संतुलित वृद्धि → विशेषताएं

(i) सभी क्षेत्रों में समान निवेश।
(ii) संतुलित विकास एक बड़े धक्के से प्रारम्भ होता है।
(iii) पूरक उद्योगों का विकास करके बाजार को बड़ा करना।
(iv) माँग एवं पूर्ति में संतुलन।
(v) पूँजी का प्लान (योजना) से सदुपयोग करना।

असंतुलित वृद्धि की विशेषता —

(i) असंतुलित वृद्धि में श्रृंखला के द्वारा आर्थिक विकास किया जाता है।

(ii) असंतुलित वृद्धि में सामाजिक ऊरि-पूँजी (शिक्षा सार्वजनिक-स्वास्थ्य, संचार, परिवहन आदि) के द्वारा विकास करके प्रत्यक्ष उत्पादक क्रियाओं का निर्माण कर उद्योगों का विकास करना।

संतुलित वृद्धि के लिए समर्थक एडम स्मिथ, नर्क्स, रोजेनस्टीन रोडान (Rosenstein Rodan) आदि ने तर्क दिया है कि निवेश संतुलित वृद्धि के सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए। उदाहरण के लिए कृषि क्षेत्र और उद्योग क्षेत्र एक दूसरे के पूरक होते है। उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि कृषि पर निर्भर करती है। यदि उद्योग क्षेत्र में उत्पादन एवं रोजगार बढ़ता है तब इसका प्रभाव कृषि क्षेत्र पर भी पड़ेगा। जिसमें कच्चे माल तथा खाद्य पदार्थों की माँग बढ़ जायेगी।

संतुलित वृद्धि के तर्क में नर्क्स कहते है कि देश में आर्थिक विकास के लिए बड़े पैमाने पर पूँजी उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है जिससे आयात या पूँजी क्षेत्र का विकास करना आवश्यक है तथा इन आयातों का प्रबंधन निर्यातों द्वारा करना आवश्यक हो जाता है अन्यथा भुगतान-शेष की कठिनाईयाँ उत्पन्न हो जाती है इसलिए जरूरी है कि घरेलू क्षेत्र एवं विदेशी क्षेत्र एक साथ कार्य करें।

असंतुलित वृद्धि के मुख्य समर्थक प्रो० ए० ओ० हर्षमैन कहते है कि सभी क्षेत्रों में एक साथ निवेश न करके कुछ ही क्षेत्रों में निवेश किया जाना चाहिए। SOC निवेश द्वारा असंतुलन उत्पन्न करके राज्य DPA निवेशों को बढ़ा सकता है या DPA में सर्वप्रथम निवेश करके राजनैतिक दबाव द्वारा SOC निवेश पर मजबूर कर

सकता है। अतः राज्य नियोजन द्वारा असंतुलित वृद्धि के सिद्धांत को अपनाकर आर्थिक विकास कर सकता है। इसी प्रकार निर्यात उद्योगों तथा आयात = प्रतियोगी उद्योगों में निवेश भुगतान शेष को अनुकूल रखता है। आयात स्थानापन्नता द्वारा अन्तिम चरणों में टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण से प्रारम्भ होता है। पहले आयातित की जाने वाली तैयार उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। और शीघ्रता के साथ उत्पादन की ऊँची स्तरों पर और पश्चानुबन्धन प्रभाव (BLE) द्वारा मध्यवर्ती वस्तुओं की ओर चला जाता है।

Note — SOC — सामाजिक उपरि पूँजी (शिक्षा, परिवहन, संचार, स्वास्थ्य)
DPA — प्रत्यक्ष उत्पादन क्रियाएँ।

संतुलित एवं असंतुलित वृद्धि में कुछ समानताएं भी है। दोनों निजी उद्यम प्रणाली के पाए जाने एवं मार्केट तंत्र पर आधारित है। दोनों ही पूर्ति सीमाओं और पूर्ति बेलोच की उपेक्षा करती है।

संतुलित वृद्धि में एक क्षेत्र का विकास अन्य क्षेत्रों के विकास पर निर्भर करता है, तो दूसरी ओर असंतुलित वृद्धि में अर्थव्यवस्था तनावों, अनुपातों तथा असंतुलन के द्वारा आर्थिक विकास के पथ पर बढ़ते हुए अन्ततः संतुलित वृद्धि पर पहुँचती है।

Class by — Dr Manisha Kumari